अध्याय

03

आलो-आँधारि

बेबी हालदार

© JCERT not to be republished

जीवन परिचय

जन्म—1973 (जम्मू कश्मीर)
परिवार की आर्थिक दशा कमजोर होने की वजह से 13 वर्ष की अल्पायु में दुगुने आयु के व्यक्ति से विवाह।

शिक्षा— सातवीं कक्षा तक
विवाह के 12-13 वर्षों के बाद पति की ज्यादतियों से परेशान होकर वे तीन बच्चों सहित पति का घर छोड़कर दुर्गापुर से फरीदाबाद आ गई। कुछ समय बाद वे गुड़गाँव चली आई और घरेलू नौकरानी के रूप में काम कर रही हैं।

इनकी एकमात्र रचना है- आलो-आँधारि।
यह मूल रूप से बांग्ला भाषा में लिखी गई तथा इसका हिंदी अनुवाद प्रबोध कुमार ने किया।

13 विदेशी भाषाओं सहित 21 भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

© JCERT not to be republished

साहित्यक परिचय

बेबी हालदार ने जिस जीवन को जिया है उसी जीवन का यथार्थ उन्होंने अपने इस रचना में उकेरा है। उन्होंने पुरुष प्रधान समाज में अनुभव किया कि समाज में अकेली स्त्री का अस्तित्व पुरुष के अभाव में विवादास्पद तो है ही दुष्कर भी है।

घरेलू नौकरानी के रूप में कार्यरत बेबी हालदार ने ना केवल इस वर्ग के सामाजिक जीवन की विडंबना को उजागर किया है बल्कि समाज को उसकी वास्तविक समस्याओं से भी अवगत कराया है।

उनकी यह रचना दिशाहीन स्त्रियों के लिए मार्गदर्शिका है।

अभावग्रस्त पारिवारिक चित्रण के साथ ही उन्होंने समाज के उस वर्ग की ओर भी ध्यान आकर्षित किया है जो मानवता के पुजारी हैं।

बेबी हालदार की रचना हमारे सम्मुख अनेक सामाजिक मुद्दों को उजागर करते हुए हमें रचनात्मक प्रवृत्ति की ओर प्रेरित करती है।

पाठ सारांश

'आलो-आंधारि' लेखिका की आत्मकथा है, इसका अर्थ है — **'अँधेरे का उजाला'**

इस पाठ की लेखिका बेबी हालदार अपने पति के अत्याचारों से तंग आकर घर त्याग देती है और अपने तीन छोटे-छोटे बच्चों के साथ किराए के मकान में रहने लगतीं हैं।

उसे हर समय काम की तलाश रहती थी। वह सभी को अपने लिए काम ढूँढ़ने के लिए कहती थी। शाम को जब वह घर वापिस आती तो पड़ोस की औरतें काम के बारे में पूछतीं। काम न मिलने पर वह उसका हौसला बढ़ाती थी। लेखिका सुनील नामक युवक से मिलती है। एक दिन उसने किसी मकान मालिक से लेखिका को मिलवाया। मकान मालिक ने आठ सौ रुपये महीने पर उसे रख लिया और घर की सफाई व खाना बनाने का काम दिया। उसने पहले काम कर रही महिला को हटा दिया। उस महिला ने लेखिका से भला-बुरा कहा। लेखिका उस घर में रोज सवेरे आती तथा दोपहर तक सारा काम खत्म करके चली जाती। घर जाकर बच्चों को नहलाती व खिलाती। उसे बच्चों के भविष्य की चिंता थी।

जिस मकान में वह रहती थी, वह महंगा था। उसने सस्ता किराए वाला मकान ले लिया। लोग उसके अकेले रहने पर तरह-तरह की बातें बनाते थे। घर के खर्च चलाने के लिए वह और काम चाहती थी। वह मकान मालिक से काम की नई जगह ढूँढ़ने को कहती है। उसे बच्चों की पढ़ाई, घर के किराए व लोगों की बातों की भी चिंता थी। एक दिन उन्होंने लेखिका से पूछा कि वह घर जाकर क्या-क्या करती है। लेखिका की बात सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने स्वयं को 'तातुश' कहकर पुकारने को कहा। वे उसे बेबी कहते थे तथा अपनी बेटी की तरह मानते थे। उनका सारा परिवार लेखिका का ख्याल रखता था। वह पुस्तकों की अलमारियों की सफाई करते समय पुस्तकों को उत्सुकता से देखने लगती। यह देखकर तातुश ने उसे एक किताब पढ़ने के लिए दी।

तातुश ने उससे लेखकों के बारे में पूछा तो उसने कई बांग्ला लेखकों के नाम बता दिए। एक दिन तातुश ने उसे कॉपी व पेन दिया और कहा कि समय निकालकर वह कुछ जरूर लिखे। काम की अधिकता के कारण लिखना बहुत मुश्किल था, परंतु तातुश के प्रोत्साहन से वह रोज कुछ पृष्ठ लिखने लगी। शौक आदत में बदला। उसका अकेले रहना समाज में कुछ लोगों को सहन नहीं हो रहा था। वे उन्हें परेशान करते थे। बाथरूम न होने से भी विशेष दिक्कत थी। मकान मालिक के लड़के के दुर्व्यवहार की वजह से वह नया घर तलाशने की सोचने लगी।

© JCERT not to be republished

एक दिन लेखिका काम से घर लौटी तो देखा कि मकान टूटा हुआ है तथा उसका सारा सामान खुले में बाहर पड़ा हुआ है। वह रोने लगी। इतनी जल्दी मकान ढूंढना भी मुश्किल था। वह सारी रात बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे बैठी रही। दो भाई नजदीक रहने के बावजूद उसकी सहायता नहीं करते। तातुश को बेबी का घर टूटने का पता चला तो उन्होंने अपने घर में कमरा दे दिया। इस प्रकार वह तातुश के घर में रहने लगी। उसके बच्चों को ठीक खाना मिलने लगा। तातुश उसका बहुत ख्याल रखते।

बच्चों के बीमार होने पर वे उनकी दवा का प्रबंध करते। उसका बड़ा लड़का किसी घर में काम करता था। तातुश ने उसके लड़के को खोजा तथा उसे बेबी से मिलवाया। लड़के को दूसरी जगह काम दिलवाया। लेखिका सोचती कि तातुश पिछले जन्म में उसके बाबा रहे होंगे। तातुश उसे लिखने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने अपने कई मित्रों के पास बेबी के लेखन के कुछ अंश भेज दिए थे। उन्हें यह लेखन पसंद आया और वे भी लेखिका का उत्साह बढ़ाते रहे। तातुश के छोटे लड़के अर्जुन के दो मित्र वहाँ आकर रहने लगे, परंतु उनके अच्छे व्यवहार से लेखिका बढ़े काम को खुशी-खुशी करने लगी। उसने उसे रोजाना शाम के समय पार्क में बच्चों को घुमा लाने के लिए कहा। अब वह पार्क में जाने लगी।

पार्क में नए-नए लोगों से मुलाकात होती। उसकी पहचान बंगाली लड़की से हुई जो जल्दी ही वापिस चली गई। लोगों के दुर्व्यवहार के कारण उसने पार्क में जाना छोड़ दिया। लेखिका को किताब, अखबार पढ़ने व लेखन-कार्य में आनंद आने लगा। तातुश के जोर देने पर वह अपने जीवन की घटनाएँ लिखने लगी। तातुश के दोस्त उसका उत्साह बढ़ाते रहे। एक मित्र ने उसे आशापूर्णा देवी का उदाहरण दिया। इससे लेखिका का हौसला बढ़ा। एक दिन लेखिका के पिता उससे मिलने पहुँचे। उसने उसकी माँ के निधन के बारे में बताया। लेखिका के भाइयों को पता था, परंतु उन्होंने उसे नहीं बताया। लेखिका काफी देर तक माँ को याद करके रोती रही। बाबा ने बच्चों से माँ का ख्याल रखने के लिए समझाया। लेखिका पत्रों के माध्यम से कोलकाता और दिल्ली के मित्रों से संपर्क रखने लगी। उसे हैरानी थी कि लोग उसके लेखन को पसंद करते हैं।

© JCERT not to be republished

शर्मिला उससे तरह-तरह की बातें करती थी। लेखिका सोचती कि तातुश उससे न मिलते तो यह जीवन कहाँ मिलता। लेखिका का जीवन तातुश के घर में आकर बदल गया। उसका बड़ा लड़का काम पर लगा था। दोनों छोटे बच्चे स्कूल में पढ़ रहे थे। वह स्वयं लेखिका बन गई थी। पहले वह सोचती थी कि अपनों से बिछुड़कर कैसे जी पाएगी, परंतु अब उसने जीना सीख लिया था। वह तातुश से शब्दों के अर्थ पूछने लगी थी। तातुश के जीवन में भी खुशी आ गई थी। अंत में वह दिन भी आ गया जब लेखिका की लेखन-कला को पत्रिका में जगह मिली। पत्रिका में उसकी रचना का शीर्षक था- "आलो-आँधारि" बेबी हालदार। लेखिका अत्यंत प्रसन्न थी। तातुश के प्रति उसका मन कृतज्ञता से भर आया। उसने तातुश के पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त किया।

शब्दार्थ—

फौरन— तुरंत,

गेट— दरवाजा,

विधवा— वह महिला जिसका पति मर गया हो,

आपबीती— अपने पर बीती हुई

बांग्ला— बंगाली,

दुर्व्यवहार— बुरा बर्ताव,

बपौती— जागीर,

अनुवादक— अनुवाद करने वाला,

प्रोत्साहित— प्रेरणा देने वाला,

अर्थ— मतलब,

अत्यंत— बहुत,

कृतज्ञता— शुक्रिया का भाव

हठात— जबरजस्ती,

दरकार—जरूरत, आवश्यकता

चेहरा खिल उठना— प्रसन्न होना,

विवश— मजबूर,

बांबी— दासी, नौकरानी,

पाढे— मोहल्ले,

आंखें भर आना— दुख से रोना,

परिवेश— माहौल,

जिज्ञासा— जानने की इच्छा,

अभिज्ञ— अनजान,

आह्लादित— प्रसन्न,

उत्कृष्ट— श्रेष्ठ,

क्षमता— सामर्थ्य,

जेठू— पिता से बड़े भाई,

वयस— उम्र, आयु,

कानी उंगली बराबर— अपने से बड़े से समानता ना कर सकना,

© JCERT not to be republished

उकता जाना— किसी एक काम को बार-बार करके बोरियत महसूस करना।

बंधु— मित्र,

तातुश— पिता के समान,

जबान— आवाज।

डस्टिंग— झाड़-पोंछ करना,

मन मसोसना-- मन की बात मन में रखना,

आहिस्ता— धीमे से,

विश्वास— यकीन,

आमार मेये बेला— पुस्तक का नाम,

तसलीमा नसरिन-- बांग्लादेश की प्रसिद्ध लेखिका।

दिक्कत— कठिनाई।

टेबिल— मेज।

ड्रार— मेज के अंदर वस्तु रखने की बनी जगह।

ऊँह— टालने का भाव।

चैन— आराम।

बेमतलब— बिना अर्थ की।

बाँदी— दासी।

नागा करना— अंतराल या छुट्टी करना।

हाट— स्थानीय बाजार।

पाड़ा— मोहल्ला,

चेष्टा— प्रयास।

ताने मारना— व्यंग्यात्मक बातें।

फर्क— अंतर।

शरम— लज्जा।

सिर पकड़कर बैठना— अत्यधिक परेशान होना।

सहेजकर— सँभालकर।

मोह— प्रेम।

तबीयत— सेहत,

मास— महीना,

गैरकानूनी— कानून के विरुद्ध।

खटना— काम में लगातार लगे।

प्रश्न उत्तर

प्रश्न—1. पाठ के किन अंशों से समाज की यह सच्चाई उजागर होती है कि पुरुष के बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है। क्या वर्तमान समय में स्त्रियों की इस सामाजिक स्थिति में कोई परिवर्तन आया है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर— पाठ के निम्नलिखित अंशों से समाज की यह सच्चाई उजागर होती है कि पुरुष के बिना स्त्री का कोई अस्तित्व नहीं है-

घर में अकेले रहते देख आस-पास के सभी लोग पूछते, तुम यहाँ अकेली रहती हो?

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

तुम्हारा स्वामी कहाँ रहता है? तुम कितने दिनों से यहाँ हो? तुम्हारा स्वामी वहाँ क्या करता है? तुम क्या यहाँ अकेली रह सकोगी? तुम्हारा स्वामी क्यों नहीं आता? ऐसी बातें सुन मेरी किसी के पास खड़े होने की इच्छा नहीं होती, किसी से बात करने की इच्छा नहीं होती।

उसके यहाँ से लौटने में कभी देर हो जाती तो सभी मुझे ऐसे देखते जैसे में कोई अपराध कर आ रही हूँ।

बाजार-हाट भी जाना होता तो वह बूढ़े मकान मालिक की स्त्री, कहती, "कहाँ जाती है रोज-रोज? तेरा स्वामी है नहीं, तू तो अकेली ही है। तुझे इतना घूमने-घामने की क्या दरकार?" मैं सोचती, मेरा स्वामी मेरे साथ नहीं है तो क्या मैं कहीं घूम-फिर भी नहीं सकती और फिर उसका साथ में रहना भी तो न रहने जैसा है। उसके साथ रहकर भी क्या मुझे शांति मिली। उसके होते हुए भी पाड़े के लोगों की क्या-क्या बातें मैंने नहीं सुनीं।

जब मैं बच्चों के साथ कहीं जा रही होती तो लोग तरह-तरह की बातें करते, कितनी सीटियाँ मारते, कितने ताने मारते। आसपास के लोग एक-दूसरे को बताते कि इस लड़की का स्वामी यहाँ नहीं रहता है, वह अकेली ही भाड़े के घर में बच्चों के साथ रहती है। दूसरे लोग यह सुनकर मुझसे छेड़खानी करना चाहते। वे मुझसे बातें करने की चेष्टा करते और पानी पीने के बहाने मेरे घर आ जाते। मैं अपने लड़के से उन्हें पानी पिलाने को कह कोई बहाना बना बाहर निकल आती।

मैंने सोचा यह क्या इतना सहज है। घर में कोई मर्द नहीं है तो क्या इसी से मुझे हर किसी की कोई भी बात माननी होगी। वर्तमान समय में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में काफी बदलाव आया है। वे अपने पैरों पर खड़ी हैं तथा अनेक तरह के कार्य कर रही हैं। महानगरों में तो अविवाहित युवतियाँ भी अकेली रहकर अपना जीवन-यापन करती हैं। कुछ मनचले अवश्य उन्हें तंग करने की कोशिश करते हैं, परंतु आम व्यक्ति का व्यवहार अपमानजनक नहीं होता।

प्रश्न-2 अपने परिवार से लेकर तातुश के घर तक के सफ़र में बेबी के सामने रिश्तों की कौन-सी सच्चाई उजागर होती है?

उत्तर— अपने परिवार से लेकर तातुश के घर तक के सफर में बेबी ने रिश्तों की सच्चाई जानी। उसने जाना कि रिश्तों का संबंध दिल से होता है, अन्यथा रिश्ते बेगाने होते हैं। पति का घर छोड़कर आने के बाद वह अकेली व असहाय थी। वह अकेले ही बच्चों के साथ किराये के मकान में रहने लगी। वह खुद ही काम ढूँढ़ने जाती। हालाँकि उसके समीप ही भाई व रिश्तेदार रहते थे, परंतु किसी ने उसकी सहायता नहीं की। वे उससे मिलने तक नहीं आए। उसे अपनी माँ की मृत्यु का समाचार तक छह महीन बाद अपने पिता से मिला। दूसरी तरफ, बाहरी व्यक्तियों ने उसकी सहायता की। सुनील नामक युवक ने उसे काम दिलवाया, तातुश ने उसे बेटी के समान माना तथा उसकी हर तरीके से मदद की। उनके प्रोत्साहन से वह लेखिका बन पाई। मकान टूटने के बाद भोला दा उसके

© JCERT not to be republished

साथ रात भर खुले आसमान में बैठा रहा। इस प्रकार दिल में स्नेह हो तो रिश्ते बन जाते हैं।

प्रश्न 3: इस पाठ से घरों में काम करने वालों के जीवन की जटिलताओं का पता चलता है। घरेलू नौकरों को और किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है? इस पर विचार करिए।

उत्तर— इस पाठ से घरों में काम करने वालों के जीवन की निम्नलिखित जटिलताओं का पता चलता है-

घरेलू नौकरों को आर्थिक सुरक्षा नहीं मिलती।

उनकी नौकरी कभी भी खत्म हो सकती है। उन्हें गंदे व सस्ते मकानों में रहना पड़ता है, क्योंकि ये अधिक किराया नहीं दे पाते।

इन लोगों का शारीरिक शोषण भी किया जाता है। नौकरानियों को अकसर शोषण का शिकार होना पड़ता है।

इन लोगों के साथ मकान मालिक अशिष्ट व्यवहार करते हैं।

बेबी की तरह इन्हें सुबह से देर रात तक काम करना पड़ता है।

अन्य समस्याएँ:- अपूर्ण भोजन व दवाइयों के अभाव में ये अकसर बीमार रहते हैं।

धन के अभाव में इनके बच्चे अशिक्षित रह जाते हैं। उन्हें कम उम्र में ही दूसरों के यहाँ काम करना पड़ता है।

ये अकसर आर्थिक संकट में फँसे रहते हैं।

प्रश्न 4: 'आलो-आँधारि' रचना बेबी की व्यक्तिगत समस्याओं के साथ-साथ कई सामाजिक मुद्दों को समेटे है। किन्हीं दो मुख्य समस्याओं पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर— 'आलो-आँधारि' एक ऐसी रचना है जो बेबी हालदार की आत्मकथा होने के साथ-साथ एक अनदेखी दुनिया के दर्शन करवाती है। यह ऐसी दुनिया है जो हमारे पड़ोस में है, फिर भी हम इसमें झाँकना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। दो प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं-

(क) परित्यक्ता स्त्री की स्थिति- इस रचना में बेबी एक परित्यक्ता स्त्री है। वह किराए के मकान में रहकर घरों में नौकरानी का काम करके गुजारा कर रही है। समाज का व्यवहार उसके प्रति कटु है। स्वयं औरतें ही उस पर ताना मारती हैं। हर व्यक्ति उस पर अपना अधिकार समझता है तथा उसका शोषण करना चाहता है। उसका मानसिक, शारीरिक व आर्थिक शोषण किया जाता है। उस पर तरह-तरह की वर्जनाएँ थोपी जाती हैं तथा सहायता के नाम पर उसका मजाक उड़ाया जाता है।

(ख) गंदी बस्तियाँ- इस रचना में गंदी बस्तियों के बारे में बताया गया है। घरेलू नौकर तंग बस्तियों में रहते हैं। वहाँ शौचालय की सुविधा भी नहीं होती। महिलाओं को इस मामले में भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। नालियों, कूड़ेदानों आदि के निकट बसी इन बस्तियों में अनेक बीमारियाँ फैलने का भय रहता है। सरकार भी अपनी आँखें मूंदे रहती है।

© JCERT not to be republished

प्रश्न—5: 'तुम दूसरी आशापूर्णा देवी बन सकती हो' -जेठू का यह कथन रचना संसार के किस सत्य को उद्घाटित करता है?

उत्तर— जेठू का यह कथन बताता है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही विकट क्यों न हों, मनुष्य इच्छाशक्ति से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। आशापूर्णा देवी भी आम गृहणी थीं। वे सारा दिन घर के काम-काज में व्यस्त रहती थीं, परंतु वे लेखन में रुचि रखती थीं। परिवार के सो जाने के बाद लिखती थीं और लिखते-लिखते विश्व प्रसिद्ध कथाकार बन गई। बेबी की स्थिति उनसे भी खराब है। वह आर्थिक संकट से ग्रस्त है, फिर भी वह निरंतर लिखकर अपनी शैली को सुधार सकती है। वह थोड़ा समय निकालकर लिख सकती है। इस तरह वह भी प्रसिद्ध लेखिका बन सकती है।

प्रश्न—6 : बेबी की जिंदगी में तातुश का परिवार न आया होता तो उसका जीवन कैसा होता? कल्पना करें और लिखें।

उत्तर— तातुश के संपर्क में आने से पहले बेबी कई घरों में काम कर चुकी थी। उसका जीवन कष्टों से भरा था। तातुश के परिवार में आने के बाद उसे आवास, वित्त, भोजन आदि समस्याओं से राहत मिली। यहाँ उसके बच्चों का पालन-पोषण ठीक ढंग से होने लगा। यदि उसकी जिंदगी में तातुश का परिवार न आया होता तो उसका जीवन अंधकारमय होता। उसे गंदी बस्ती में रहने के लिए विवश होना पड़ता। उसके बच्चों को शिक्षा शायद नसीब ही नहीं होती, क्योंकि उसके पास आय के स्रोत सीमित होते। बच्चे या तो आवारा बन जाते या बाल मजदूर बनते। अकेली औरत होने के कारण उसे समाज के लोगों से अश्लील व्यवहार का सामना करना पड़ता, साथ ही अवारा लोगों के शोषण का शिकार भी होना पड़ सकता था। बड़ा लड़का तो शायद ही उसे मिल पाता। उसके पिता भी उसे याद नहीं करते और माँ की मृत्यु का समाचार भी नहीं मिलता। इस तरह बेबी का जीवन चुनौतीपूर्ण तथा अंधकारमय होता।

निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1: 'आलो-आँधारि' पाठ के आधार पर तातुश का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर— तातुश सज्जन प्रवृत्ति के अधेड़ अवस्था के शिक्षक हैं, वे दयालु हैं तथा करुण भाव से युक्त हैं। जब बेबी उनके घर काम करने आई तो उन्होंने उसके काम की प्रशंसा की। वे उसे अपनी बेटी के समान समझते थे। वे उसे कदम-कदम पर प्रोत्साहित करते थे। बेबी की पढ़ने के प्रति रुचि देखकर वे कॉपी व पेन देते हैं तथा उसे लिखने के लिए प्रेरित करते हैं। वे उसके बच्चों को स्कूल में भेजने की व्यवस्था करते हैं। उसका घर टूट जाने के बाद उसे अपने घर में जगह देते हैं। वे उसके बड़े लड़के को ढूँढ़कर उससे मिलवाते हैं तथा बाद में अच्छी जगह पर उसे काम दिलवाते हैं। जब कभी बेबी के बच्चे बीमार होते हैं तो

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

उनका इलाज भी करवाते थे। तातुश बेबी के लेखन को अपने मित्रों के पास भेजते थे। वे कोई ऐसी बात नहीं करते थे जिससे बेबी को ठेस लगे। ऐसे चरित्र समाज में दुर्लभ होते हैं तथा आदर्श रूप प्रस्तुत करते हैं।

प्रश्न— 2: बेबी के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर— 'आलो-आँधारि' रचना की प्रमुख पात्र बेबी है। यह उसकी आत्मकथा है उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(क) परित्यक्ता- बेबी की शादी अपने से दुगुनी उम्र के व्यक्ति के साथ हुई। उसे ससुराल में सदा प्रताड़ना मिली। वह किसी दूसरी महिला के साथ रहने लगा था। अंत में वह अपने पति को छोड़कर अलग रहने लगी और घरेलू कामकाज करके निर्वाह करने लगी। उसे अनेक तरह की सामाजिक कठिनाइयों का सामना करना पडा।

(ख) साहसी व परिश्रमी- बेबी पति के अत्याचारों को सहन न करके उससे अलग किराए के मकान में रहने लगी। वह लोगों के घरों में काम करके गुजारा करने लगी। वह दिन-रात काम करती थी। तातुश के घर का अत्यधिक काम वह शीघ्रता से कर लेती थी। वह हर स्थिति का सामना करती है। घर तोड़े जाने के बाद वह रात खुले आसमान के नीचे गुजारती है।

(ग) अध्ययनशील- बेबी को पढ़ने-लिखने का चाव था। तातुश की पुस्तकों की अलमारियाँ साफ करते समय वह उन पुस्तकों को खोलकर देखती थी। तातुश ने उसे 'आमार मेये बेला' पुस्तक पढ़ने के लिए दी तथा बाद में कॉपी व पेन भी लिखने के लिए दिया। तातुश की प्रेरणा से उसने लिखना शुरू किया।

(घ) स्नेहमयी माता- बेबी अपने बच्चों के भविष्य की बहुत चिंता करती है। वह उन्हें पढ़ाना-लिखाना चाहती है। तातुश की मदद से वह दो बच्चों को स्कूल भेजती है। वह बड़े लड़के के लिए भी व्याकुल रहती है जो किसी के घर काम करता है। तातुश उसे घर लाते हैं। निष्कर्षत: बेबी साहसी, परिश्रमी, अध्ययनशील व स्नेहमयी चरित्र की है।

© JCERT not to be republished

वास्तुनिष्ठ प्रश्न

1. "आलो-अँधारि" किसकी रचना है ?

(क) दुष्यंत कुमार की

(ख) बेबी हालदार की

(ग) अक्क महादेवी की

(घ) त्रिलोचन की

उत्तर— (ख) बेबी हालदार की

2. बेबी हालदार को काम दिलवाने में किस युवक ने मदद की थी?

(क) सुनील

(ख) भोला दा

(ग) उसके भाई

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर— (क) सुनील

3. बेबी हालदार कितना पढ़ी लिखी थी?

(क) चौथी तक

(ख) पाँचवी तक

(ग) छठी तक

(घ) सातवीं तक

उत्तर— (घ) सातवीं तक

4. जब बेबी हालदार का घर तोड़ दिया गया तो उसकी मदद किसने की?

(क) सुनील

(ख) जेठू

(ग) उसके भाई

(घ) भोला दा

उत्तर— (घ) भोला दा

5. बेबी हालदार के लेखन की तुलना किससे की गई है?

(क) आशापूर्णा देवी

(ख) जेठू

(ग) तातुश

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर— (क) आशापूर्णा देवी

6. बेबी हालदार ज्यादातर अपना लेखन किस समय में करती थी?

(क) सुबह

(ख) दोपहर

(ग) शाम

(घ) रात

उत्तर— (घ) रात

7. तातुश के बच्चे तातुश को क्या कहकर बुलाते थे?

(क) पिता

(ख) बाबा

(ग) तातुश

(घ) पापा

उत्तर— (ग) तातुश

8. बेबी हालदार के कितने बच्चे थे?

(क) दो

(ख) तीन

(ग) चार

(घ) एक

उत्तर— (ख) तीन

© JCERT not to be republished

9. आलो अंधारी का अर्थ क्या है?

(क) अंधेरे का उजाला

(ख) उजाले का अँधेरा

(ग) रात का उजाला

(घ) अँधेरे की किरण

उत्तर— (क) अंधेरे का उजाला

10. जेठू कौन थे?

(क) लेखिका के मित्र

(ख) तातुश के मित्र

(ग) तातुश के भाई

(घ) लेखिका के भाई

उत्तर— (ख) तातुश के मित्र

तातुश कौन थे— बेबी हालदार के नये मालिक जिनके वहां, वह धरेलू नौकरानी का कार्य करती थी।

तातुश के कितने बच्चे थे— तीन

तातुश के छोटे लड़के का क्या नाम था— अर्जुन

जेठू कौन थे— तातुश के मित्र

जेठू का अर्थ क्या होता है— पिता का बड़ा भाई (ताऊजी)

बेबी हालदार के बड़े लड़के को कौन ले गए थे— पड़ोस के लोग

बेबी हालदार को पार्क में जो लड़की मिली, उसका क्या नाम था— सुनीति

जेठू ने कौन सी लेखिका के बारे में बता कर बेबी हालदार को लिखने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की— आशापूर्णा देवी

बेबी हालदार के लेखन की तुलना किससे की गई थी— आशापूर्णा देवी से

बेबी हालदार अपना ज्यादा लेखन किस समय करती थी— रात में

पत्रिका में बेबी हालदार की रचना किस शीर्षक से छपी थी— आलो आँधारि

सजने सँवरने के बारे में बेबी की क्या राय थी— उन्हें बचपन से ही संजने संवरने का शौक नही था।

तातुश लेखिका के आने पर खुश क्यों हो जाते थे— क्योंकि वो लेखिका को बेटी की तरह मानने लगे थे।

© JCERT not to be republished